आरोग्य भवन में हुआ 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सफाहोड़' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान

सफाहोड़ जैसे आंदोलन सामने लाये जायें, तो दिखेगी आदिवासियों की ताकत : अशोक भगत

- अमृत महोत्सव के तहत इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व विकास भारती बिशुनपुर ने किया आयोजन

लाइफ रिपोर्टर @रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र और विकास भारती बिशुनपुर द्वारा अमृत महोत्सव के तहत आरोग्य भवन में 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सफाहोड़' विषयक ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया. इसमें पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि आधुनिक साहित्यकारों ने आदिवासी समाज का नकारात्मक चित्रण किया है, निहायत कमजोर पक्ष रखा है, जो जनजातीय समाज के स्वाभिमान और जीवनमूल्यों के खिलाफ है. सफाहोड़ आंदोलन अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक सुधारवादी आंदोलन था, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी. ऐसे आंदोलन सामने लाये जायेंगे, तो आदिवासियों की ताकत दिखेगी.

प्रभात खबर के डॉ आरके नीरद ने कहा कि यह ओदोलन संताल जनजाति के बीच एक शुद्धीकरण का आंदोलन था, लेकिन इसका स्वरूप सम्राज्यवाद विरोधी हो गया. यह आंदोलन अहिंसक लेकिन बेहद प्रभावशाली था. गांधी का अंहिंसक आंदोलन कहीं न कहीं झारखंड के टाना भग़त और सफाहोड़ आंदोलन से प्रभावित था. उन्होंने सफाहोड़ समुदाय उसके स्वरूप, उसकी पद्धति, उसकी मान्यता आदि तमाम विषयों पर विस्तार से चर्चा की. सिदो-कान्हू विवि के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक डॉ डीएन वर्मा ने कहा कि ऐसे आंदोलनों पर बहुत कम काम हुआ है. गौतम चौधरी ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय जीवन मूल्यों को लेकर जंग छेड़ने वाले नायकों पर काम करने की जरूरत है. कार्यक्रम का संचालन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची शाखा के निदेशक डॉ कुमार संजय झा और धन्यवाद ज्ञापन शाखा की परियोजना प्रमुख बोलो कुमारी उरांव ने किया.

SPECIAL LECTURE ON FREEDOM MOVEMENT

Indira Gandhi National Centre for the Arts, Regional Centre Ranchi organised a Special Lecture (hybrid mode) on 'Indian Independence Movement and Saphahor' on Tuesday in collaboration with Vikas Bharti, Bishunpur as a part of 'Azadi Ka Amrit Mahotsav'. Saphahor (Safa meaning clean and Hor meaning man) is a movement which began in the year 1868 by the Santhals of Santhal Pargana. The movement has been representing a self-disciplined fight for the protection of the traditional life values and cultural dignity of the Santhal society for nearly 150 years. The men of the community have long hair, empty bodied with white dhoti, rosary of Tulsi and Rudraksh around the neck. The women wear their hair open, their attire is white sari and tulsi rosary is tied around their head. The choruses of expressive songs and the chanting of 'Ramo Naam' are integral part of their culture. The lecture on Saphahor was aimed to elucidate the movement's journey from inception to all the challenges that were laid by the British to crush the movement. The Speaker of the session was Dr. R.K. Nirad, Senior Journalist. Padma Shri recepient Ashok Bhagat, Secretary, Vikas Bharti Bishunpur graced the occasion as the Chief Guest and Prof. D.N. Verma, Retd. Professor, Department of History, Sidho Kanhu Birsa University, Dumka was virtually present as the Guest of Honour. The program was coordinated by Dr. Kumar Sanjay Jha, Regional Director, Ranchi.

जनजातीय समाज भारत की मूल अवधारणा का प्रहरी है : भगत

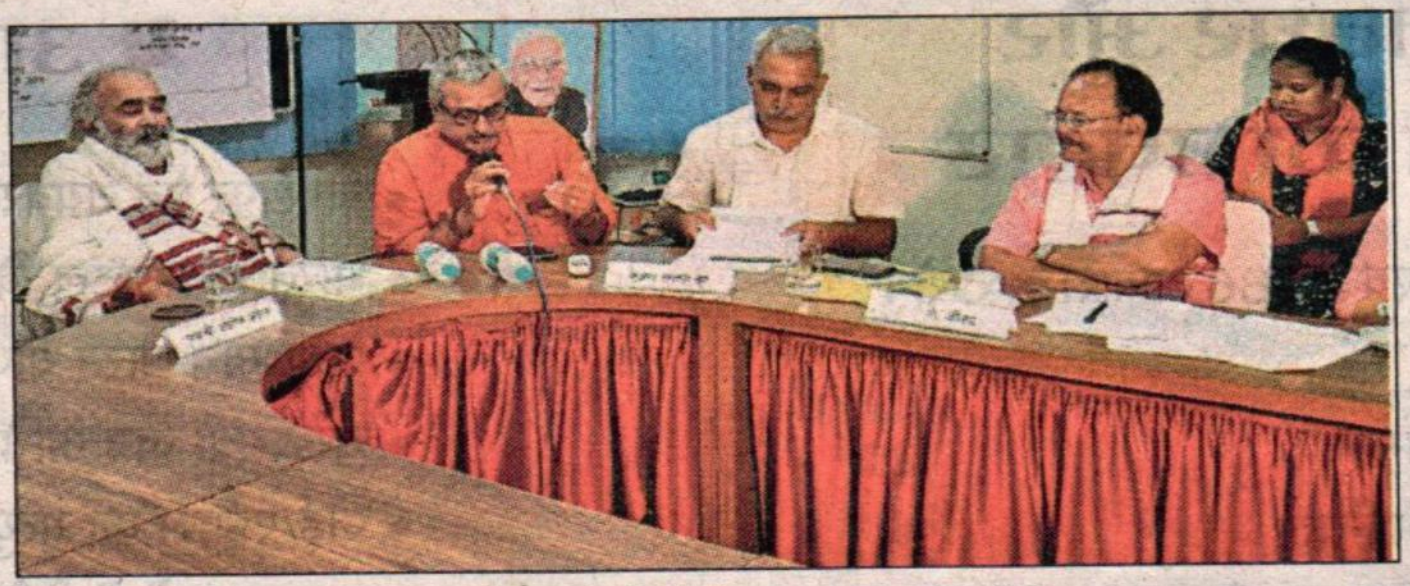

विकास भारती में मंगलवार को आयोजित संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते अतिथि।

रांची | प्रमुख संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र की रांची शाखा की ओर से मंगलवार को विकास भारती में स्वतंत्रता आंदोलन में सफाहोड़ का योगदान विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि आधुनिक साहित्यकारों ने आदिवासी समाज का नकारात्मक साहित्यिक चित्रण किया, जो जनजातीय समाज के स्वाभिमान और जीवन मूल्यों के खिलाफ है। कहा कि हमारा जनजातीय समाज स्वाभिमानी और शक्तिशाली होने के साथ आदि सनातन परंपरा का संवाहक है और भारत की मूल अवधारणा का प्रहरी है।

उन्होंने कहा कि सफाहोड़ आंदोलन अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक सुधारवादी आंदोलन था। जिसने आगे चलकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। कहा कि रविवार का दिन पूरी दुनिया में पवित्र दिन के रूप में मनाया जाता है, जिसे आधुनिक भारत के कथित अभिजात मानसिकता वालों ने तो स्वीकार कर लिया, लेकिन आदिवासी समाज ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। आज भी यह समाज गुरुवार को अवकाश मनाता है। यह जनजातीय समाज का स्वभिमान है। अशोक भगत ने महात्मा गांधी और विनोबा भावे की चर्चा करते हुए कहा कि जनजातीय समाज को जब तक स्वायत शासन प्रणाली प्राप्त नहीं होगी तब तक यह समाज संघर्ष करता रहेगा।

संगोष्ठी

- सफाहोड़ आंदोलन अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक सुधारवादी आंदोलन था
- सफाहोड़ विद्रोह जनजातीय समाज का शुद्धतावादी व सम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन था: डॉ डीएन वर्मा

कार्यक्रम में सिद्धो-कान्हू विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक डॉ डीएम वर्मा ने सफाहोड़ विद्रोह के ऐतिहासिक तथ्यों पर चर्चा। कहा कि यह विद्रोह जनजातीय समाज का शुद्धतावादी व सम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन था। झारखंड में चले इस प्रकार के विद्रोहों पर बहुत कम काम हुआ है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र जैसी संस्था अगर इस पर काम करती है, तो इसका राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव पड़ेगा। कार्यक्रम का संचालन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, रांची शाखा के निदेशक डॉ कुमार संजय झा ने किया।